

SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)



भारत में जैव विविधता के संरक्षण की आवश्यकता एवं रणनीति

रवींद्र कुमार, भूगोल विभाग,
बख्शी का तालाब इंटर कॉलेज, लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Corresponding Author

रवींद्र कुमार, भूगोल विभाग,
बख्शी का तालाब इंटर कॉलेज,
लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/03/2022

Revised on : -----

Accepted on : 16/03/2022

Plagiarism : 07% on 09/03/2022



Similarity Found: 7%

Date: Wednesday, March 09, 2022

Statistics: 225 words Plagiarized / 3447 Total words

Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Hkkjr esa tSo fofoeëkrk ds laj{kk dh vko';drk ,oa j.kuhfr ys[kd& johaae dqekj] çoaë
Hkwoksy foHkkkj ç'kh dk rkyk: baVj d,yst ytkuA 'kksëk lkj tSo fofoeëkrk fdH Hkh
ikfjflFkfrdh ra= dk çk.k rRo gS D;ksafd ftl ikfjflFkfrdh ra= esa tSo fofoeëkrk ftruh gh vfëkd
gksrh gS og ikfjflFkfrdh ra= mrug gh LoLFk jgrk gS vkSj mrug gh larqyu esa jgrk gSA
lkekU;r;k tSo fofoeëkrk dk vk'; fdH Hkh ikfjflFkfrdh ra= esa isM+ ikSëkksa ,oa tho
tarqvkSa dh fofoeëkrk iw.kZ mifLFkfr ls gSA bls dkj.k

शोध सार

जैव विविधता किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र का प्राण तत्व है, क्योंकि जिस पारिस्थितिकी तंत्र में जैव विविधता जितनी ही अधिक होती है, वह पारिस्थितिकी तंत्र उतना ही स्वस्थ रहता है और उतना ही संतुलन में रहता है। सामान्यतया जैव विविधता का आशय किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र में पेड़-पौधों एवं जीव-जंतुओं की विविधता पूर्ण उपस्थिति से है। इसके कारण आहार श्रृंखला या ऊर्जा प्रवाह सुगमता से होता रहता है और जब कभी इसकी विविधता कम हो जाती है तो वहां ऊर्जा प्रवाह और आहार श्रृंखला बाधित हो जाती हैं और इसके कारण उस पारिस्थितिकी तंत्र के अनेक जीव एवं पेड़ पौधे नष्ट हो जाते हैं, जिससे वहां रहने वाले जीव-जंतु एवं मनुष्यों को अत्यंत ही समस्या का सामना करना पड़ता है। वर्तमान समय में औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण के कारण विश्व के साथ-साथ भारत में भौतिकता वादी सोच को बढ़ावा मिल रहा है। इसके कारण लोगों में विलासिता की प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रही है, अतः आदमी अधिक सुख-सुविधा भोगी होता जा रहा है जिससे प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से शोषण हो रहा है, अस्तु जैव विविधता खतरे में पड़ गई है। इसके साथ ही भारत की भावी पीढ़ियों को भी स्वस्थ पर्यावरण मिल सके इसके लिए जैव विविधता का संरक्षण परम आवश्यक है। भारत में जैव विविधता के ह्रास के क्या कारण हैं? जैव विविधता के संरक्षण के लिए भारत में सरकार द्वारा अनेकों प्रयास भी किए जा रहे हैं। उन सभी का विवरण इस लेख में किया गया है। इस लेख को लिखने के पूर्व मैंने अनेक पुस्तकों, पत्रों, पत्रिकाओं एवं शोध पत्रों का अध्ययन किया तथा जानने का प्रयत्न किया कि जैव विविधता की संकल्पना क्या है? भारत के लिए यह क्यों आवश्यक है? भारत में इसका संरक्षण कैसे हो सकता है? पुनः लोगों में इस संबंध में जागरूकता बढ़ाने और

इस की संकल्पना को सरल रूप में लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से ही इस लेख की रचना की है।

मुख्य शब्द

जैव विविधता, पारिस्थितिकी तंत्र, संसाधन, संरक्षण, नगरीकरण, औद्योगिकरण.

जैव विविधता की अवधारणा

जैव विविधता संपूर्ण पृथ्वी या किसी क्षेत्र की जैविक विविधता या जैविक संपन्नता को व्यक्त करती है, अर्थात् किसी क्षेत्र के विभिन्न पेड़-पौधे एवं जीव जंतु की पाई जाने वाली प्रजातियां मिलकर जैव विविधता का निर्माण करती है। जिस क्षेत्र में पेड़ पौधे एवं जीव जंतुओं की एवं उनकी प्रजातियों की संख्या जितनी ही अधिक होती है वह क्षेत्र जैव विविधता के दृष्टि से उतना ही संपन्न माना जाता है इसके विपरीत जहां इनकी संख्या कम होती है वह जैव विविधता की दृष्टि से उतना ही विपन्न होता है।

सर्वप्रथम जैव विविधता शब्द का प्रयोग जीव वैज्ञानिक थॉमस यूजीन लवजाय ने 1980 में किया था, उन्होंने इसके लिए जैविक विविधता (Biological Diversity) शब्द का उपयोग किया था। 1985 में डब्ल्यू रोशन ने सर्वप्रथम जैव विविधता शब्द का प्रयोग किया था इनके अनुसार पृथ्वी के सभी पेड़ पौधों एवं जीव जंतुओं में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की विशेषताओं को जैव विविधता कहते हैं। किंतु जैव विविधता की संकल्पना को आधार देने का कार्य सर्वप्रथम ई.ओ. विल्सन ने किया था, अतः इन्हें जैव विविधता का पिता कहा जाता है। (Maurya S.D. Maurya And Maurya R.K. 2018)

जैव विविधता की परिभाषाएं

1. जैव विविधता समस्त स्रोतों यथा अंतर क्षेत्रीय, स्थलीय, सागरीय एवं अन्य जलीय पारिस्थितिकी तंत्रों के जीवों के मध्य अंतर और साथ ही उन सभी पारिस्थितिकी तंत्र समूह जिनके ये भाग हैं में पाई जाने वाली विविधता है। (पृथ्वी सम्मेलन –रियो डी जनेरियो, 1992)
2. जैव विविधता या जैविक विविधता विभिन्न प्रकार के पारिस्थितिकी तंत्रों में पाए जाने वाले सभी जीवों के बीच होने वाले परस्पर संबंधों व उनके मध्य होने वाली प्रक्रियाओं से परिभाषित होता है। (ई ओ विल्सन)
3. जैव विविधता विशिष्टतया आनुवांशिक, प्रजाति तथा पारिस्थितिकी तंत्र के विविधता का स्तर मापता है। (संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम)

जैव विविधता के प्रकार

जैव विविधता तीन प्रकार की होती है:

1. अनुवांशिक विविधता
 2. प्रजातीय विविधता
 3. पारितंत्रीय विविधता
1. **अनुवांशिक विविधता:** प्रजातियों में पाई जाने वाली आनुवांशिक विभिन्नता को आनुवांशिक विविधता कहते हैं यह जीवों के विभिन्न आवासों में विभिन्न प्रकार के अनुकूलन का परिणाम होती है। इसके कारण विभिन्न पारिस्थितिकी क्षेत्रों में निवास करने वाले एक प्रजाति के जीवों के रंग, कद, गुण आदि में अंतर पाया जाता है।
 2. **प्रजातीय विविधता:** प्रजातियों में पाई जाने वाली विभिन्नता को प्रजातीय विविधता के नाम से जाना जाता है किसी भी विशेष समुदाय अथवा पारितंत्र ने एक ही प्रजाति के जीव अलग-अलग आकार, कद, रंग, रूप के मिलते हैं।
 3. **पारितंत्रीय विविधता:** पारितंत्रिय विविधता पृथ्वी पर पाए जाने वाले पारितंत्रों में उस विभिन्नता को कहते हैं जिसमें प्रजातियों का निवास होता है यह विविधता जैव भौगोलिक क्षेत्रों जैसे झील, मरुस्थल, ज्वारनदमुख,

उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों आदि में प्रतिबिंबित होती है। इसके कारण भी एक ही जलवायु में रहने वाले पेड़ पौधों एवं जीव जंतु में विभिन्नता पाई जाती है।

भारत में जैव विविधता

भारत विश्व का केवल 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है किंतु यहां विश्व की सात से आठ प्रतिशत जैव विविधता पाई जाती है। भारत में पौधों की लगभग 45000 प्रजातियां पाई जाती हैं जो विश्व के पौधों की कुल प्रजातियों का 7 प्रतिशत है, इनमें से 1336 प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। इसी तरह भारत में लगभग 15000 फूलों की प्रजातियां पाई जाती हैं जो विश्व की फूलों की प्रजातियों का 6 प्रतिशत है, इनमें से 1500 प्रजातियों पर लुप्त होने का खतरा है।

भारत में 91000 जीवों की प्रजातियां पाई जाती हैं, यह विश्व के जीवों की कुल संख्या का 6.5 प्रतिशत है। इनमें से 65000 कीड़ों की प्रजातियां, 2456 मछली प्रजातियां, 1230 पक्षियों की प्रजातियां, 372 स्तनपाई, 440 सरीसृप, 200 उभयचर तथा 500 मोलस्क प्रजातियां शामिल हैं। भारत में भेड़ों की 400, मवेशियों की 27 और बकरियों की 22 प्रजातियां पाई जाती हैं। उपरोक्त विवरण यह दर्शाता है कि भारत प्रजातियों का अजायबघर है। यहां लगभग अधिकांश तरह की प्रजातियां पाई जाती हैं जो विश्व भर में अलग-अलग जलवायु वाले क्षेत्रों में मिलती हैं इसका कारण यह है कि भारत में सभी प्रकार के जलवायु, उच्चावचन या भौगोलिक क्षेत्र मिलते हैं। (Forest Report -2019, GOI)

भारत के लिए जैव विविधता की आवश्यकता

भारत एक विशाल देश है जिसमें लगभग 134 करोड़ लोग निवास करते हैं, यह विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह विश्व का सातवां बड़ा देश है। जनसंख्या की दृष्टि से इसका स्थान चीन के बाद दूसरा है। कुछ प्रमुख बिंदुओं का विवरण नीचे दिया गया है जो भारत में जैव विविधता की आवश्यकता को संदर्भित करते हैं।

- पारितंत्रीय आवश्यकता:** पारिस्थितिकी तंत्र में कोई भी वनस्पति या जीव बिना कारण विकसित नहीं होता है सबका अपना महत्व होता है क्योंकि सब एक दूसरे पर निर्भर होते हैं, एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं होता है। पारितंत्र में जितनी अधिक विविधता होती है और जातियों के विपरीत परिस्थितियों में रहने की क्षमता उतनी ही अधिक होती है, साथ ही साथ वह पारिस्थितिकी तंत्र उतना ही स्थिर होता है इसीलिए भारत में जैव विविधता अत्यंत आवश्यक है।
- आर्थिक आवश्यकता:** सामान्यतया जैव विविधता संसाधनों का भंडार होती है, विभिन्न जीव-जंतुओं के साथ-साथ मनुष्यों की विभिन्न आवश्यकताएं भी जैव विविधता के कारण ही पूरी होती हैं। इसकी उपयोगिता भोज्य पदार्थ, वस्त्र निर्माण, आवास निर्माण, औषधि निर्माण, सौंदर्य प्रसाधन के निर्माण आदि में सहायक होती है। भारत में लगभग 134 करोड़ लोग रहते हैं, इतने लोगों को जीवन की बुनियादी जरूरतें पूरी हो सके इसके लिए जैव विविधता को बनाए रखना अत्यंत ही आवश्यक है।
- वैज्ञानिक आवश्यकता:** जैव विविधता जीवों एवं वनस्पतियों के विकास के शोध में सहायक होती है। प्रत्येक प्रजाति हमें यह बताती है कि जीवन का आरंभ कैसे हुआ और यह भविष्य में कैसे विकसित होगा। पारितंत्र में एक प्रजाति का जीवन कैसे दूसरे प्रजाति पर निर्भर है आदि तथ्यों पर शोध में इसके द्वारा सहायता मिलती है। जैव विविधता का स्तर अन्य जीवित प्रजातियों के साथ हमारे संबंध का एक अच्छा पैमाना है।

भारत में प्रजातियों के विविधता के ह्रास के मुख्य कारण

भारत में बढ़ते भौतिकता वादी जीवन दर्शन से कई प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गई हैं, उदाहरण के लिए बाघ, चीता, मगरमच्छ, कस्तूरी मृग, कछुआ, गिद्ध, हंस आदि। यहाँ जैव विविधता में हाल के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

1. आवास विनाश
2. आवास विखंडन
3. पर्यावरण प्रदूषण
4. विदेशी मूल के पौधों का आक्रमण
5. अति शोषण
6. वन्यजीवों का शिकार
7. वन विनाश
8. अति चारण
9. कीटनाशकों का उपयोग

1. **आवास विनाश:** बढ़ती जनसंख्या, नगरीकरण एवं औद्योगिकरण के कारण पेड़ पौधों एवं जीव जंतु के आवासों का विनाश होता जा रहा है क्योंकि नगरों एवं कृषि क्षेत्रों का धीरे-धीरे विस्तार होता जा रहा है और कंक्रीट के जंगल खड़े होते जा रहे हैं। इसके कारण पेड़ पौधों की कटाई हो रही है और परिणाम स्वरूप जीव जंतुओं के आवास भी कम होते जा रहे हैं। इस कारण से भारत में जैव विविधता का ह्रास हो रहा है।

2. **आवास विखंडन:** जनसंख्या के कारण नित्य नए-नए नगरों, सड़क एवं रेल मार्गों का जाल बनता जा रहा है, जिसके कारण पारिस्थितिकी तंत्र के आवासों का विखंडन हो रहा है और इस कारण से भी जैव विविधता का ह्रास हो रहा है क्योंकि जीव जंतु प्राकृतिक दृष्टि से बड़े आवासों में अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं और जब उनके आवास छोटे हो जाते हैं तो उसके अंदर मनुष्यों का आवागमन हो जाता है, जो उनके सुरक्षा के लिए खतरा होते हैं।

3. **पर्यावरण प्रदूषण:** बढ़ते पर्यावरण एवं ग्लोबल वार्मिंग के कारण पेड़ पौधों की अनेक प्रजातियां नष्ट होती जा रही हैं और इसके कारण संबंधित पेड़ पौधों पर अपना जीवन जीने वाले जीव जंतु भी अपने पारिस्थितिकी तंत्र के अभाव में खत्म होते जा रहे हैं। अतः पर्यावरण प्रदूषण जैव विविधता के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है।

4. **विदेशी मूल के पौधों का आक्रमण:** वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व एक ग्लोबल विलेज बन गया है। इसके कारण पेड़ पौधों की प्रजातियों का भी वैश्विक प्रसार हो रहा है इसके कारण विश्व के अन्य भागों से भारत में आए हुए कई प्रजातियों ने यहां की देसी प्रजातियों को नष्ट कर दिया है या उनको कम कर दिया। इसके कारण भी भारत में जैव विविधता का तेजी से ह्रास हो रहा है।

5. **अतिशोषण:** बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वन संसाधनों का अधिशोषण हो रहा है। इसके कारण देश की अनेक पेड़ पौधों की प्रजातियां एवं उस पर आश्रित जीव जंतुओं की प्रजातियां नष्ट होती जा रही है जिससे देश में जैव विविधता घटती जा रही है।

6. **वन्यजीवों का शिकार:** देश में अनेक शिकार करने वाले लोग एवं तस्कर दुर्लभ जीवों को मार कर के उनके चमड़े, सींग एवं अन्य अंगों को महंगे दामों में बेचते हैं और कई शौकीन लोग इन्हें खरीदते भी हैं, इसके कारण भी अनेक जीव समाप्त होते जा रहे हैं। इसी तरह चंदन जैसे पेड़ों की लकड़ी की भी बाजार में बहुत मांग रहती है जिसके कारण अनेक लोग इसको काट कर के और उसे बाजार में महंगे दामों पर बेच देते हैं। यह भारत में जैव विविधता के ह्रास के मुख्य कारणों में है।

7. **वन विनाश:** बढ़ती जनसंख्या के कारण दिन प्रतिदिन कृषि क्षेत्र का विस्तार होता जा रहा है, इसके कारण जो क्षेत्र पहले वनों के अधीन थे अब उसका उपयोग प्रतिरूप परिवर्तित होकर कृषि एवं आवास उपयोग में बदल रहा है। इसके कारण देश भर में वन क्षेत्र में कमी आ रही है फलस्वरूप जैव विविधता में ह्रास हो रहा है।

8. **अतिचारण:** देश के विभिन्न भागों में पशुओं के अति चारण के कारण भी अनेक पेड़-पौधे की प्रजातियां समाप्त होती जा रही है और इसके कारण इन पेड़ पौधों पर आश्रित अन्य जीव जंतु भी घटते जा रहे हैं। देश में जैव विविधता में ह्रास का एक कारण यह भी है।

9. **कीटनाशकों का उपयोग:** देश में हरित क्रांति के बाद निरंतर कृषि एवं बागाती कृषि में उर्वरकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग तेजी से बढ़ा है। इसके कारण अनेक पेड़ पौधों की प्रजातियां नष्ट होती जा रही हैं और इसके कारण अनेक जीव-जंतु जो कीटनाशकों से युक्त पेड़ पौधों की पत्तियां खाते हैं वह समाप्त हो जा रहे हैं। इसी कारण से गिद्ध, चील आदि जीव लगभग समाप्त हो गए हैं। (Maurya S.D. And Maurya R.K.)

भारत में जैव विविधता के संरक्षण हेतु प्रयास

भारत विश्व के उन गिने चुने देशों में से एक है जिसने जैव विविधता के संरक्षण के लिए 1972 से ही प्रयास शुरू कर दिया था। इसके लिए देश में वनों एवं जीव जंतुओं के संरक्षण हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। वनों के संरक्षण हेतु अनेकों राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य एवं जैव मंडल रिजर्व की स्थापना की गई है। अनेक जीवों को संरक्षित की श्रेणी में रखा गया है एवं उनके शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसके अतिरिक्त देशभर में अनेकों योजनाएं प्रजातियों के संरक्षण हेतु चल रही हैं कुछ का विवरण अधोलिखित है:

वन संरक्षण: वनों का जीवन और पर्यावरण के साथ जटिल संबंध है वन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हमें एवं अन्य जीव-जंतुओं को बहुत अधिक लाभ पहुंचाते हैं अतः वनों के संरक्षण की जैविक एवं मानवीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसी कारण भारत सरकार ने पूरे देश के लिए 1952 में वन संरक्षण नीति बनाई थी जिसमें 58 में संशोधित कर दिया गया, इस नीति में 1972 में पुनः संशोधन किया गया। वर्ष 1988 में देश में नई वन नीति लागू की गई। इस नीति के अनुसार सरकार सतत पोषणीय वन प्रबंध पर बल दे रही है जिससे वन संसाधनों का संरक्षण एवं विकास किया जाएगा, दूसरी तरफ स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं को भी पूरा किया जायेगा। इस वन नीति के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. देश में 33 प्रतिशत भाग पर वन लगाया जायेगा, जबकि वर्तमान समय में केवल 22 प्रतिशत क्षेत्र पर ही वन है।
2. पारिस्थितिकी संतुलन को बनाए रखने हेतु पारिस्थितिकी असंतुलित क्षेत्रों में वन लगाने पर जोर दिया जायेगा।
3. देश की प्राकृतिक धरोहर जैव विविधता और आनुवांशिक फूलों का संरक्षण।
4. मृदा अपरदन और मरुस्थलीकरण रोकना तथा बाढ़ के नियंत्रण हेतु प्रयास करना।
5. खाली भूमि पर सामाजिक वानिकी एवं वन रोपण द्वारा वन आवरण क्षेत्र का विस्तार।
6. वनों की उत्पादकता बढ़ाकर वनों पर निर्भर लोगों को इमारती लकड़ी ईंधन चारा भोजन आदि उपलब्ध कराना।
7. पेड़ लगाने हेतु लोगों में जागरूकता पैदा करना तथा पेड़ों के संरक्षण हेतु जन आंदोलन चलाना।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सामाजिक वानिकी की अवधारणा को भी अपनाया गया है। सामाजिक वानिकी समाज का, समाज के द्वारा, समाज के लिए वनीकरण है। इसके द्वारा पर्यावरणीय, सामाजिक व ग्रामीण विकास में मदद के उद्देश्य से वनों का प्रबंध और सुरक्षा तथा खाली पड़ी बंजर एवं सरकारी भूमि पर वनारोपण किया जाता है। इसके अंतर्गत खेतों की मेड़ों पर एवं सड़कों, रेल की पटरियों एवं नहरों के किनारे खाली भूमि पर ग्रामीणों द्वारा वन लगाना एवं उनके फल लकड़ी आदि का उपयोग करना सम्मिलित है।

भारत में वनों एवं वन्यजीवों के संरक्षण हेतु तीन प्रकार के संरक्षित क्षेत्रों के निर्माण पर बल दिया जा रहा है। (Forest Policy (2018 Government of India)

1. **राष्ट्रीय उद्यान:** यह सरकार द्वारा पूर्णतया संरक्षित क्षेत्र होता है, इसमें मानवीय कार्यों पर पूर्णतया नियंत्रण होता है, इसकी सीमा निश्चित होती है। वर्तमान समय में देश में 102 राष्ट्रीय उद्यान हैं इसमें पशुओं की चराई, पेड़ों की कटाई आदि पर प्रतिबंध होता है।

2. **अभयारण्य:** यह आंशिक संरक्षित क्षेत्र होते हैं इसमें पशुओं की चराई या इंधन आदि के लिए लकड़ी की कटाई पर प्रतिबंध नहीं है। देश भर में 515 से अधिक अभयारण्य हैं।

3. **जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र:** यह भी संरक्षित वन क्षेत्र होता है इसका आकार काफी बड़ा होता है एक जैव मंडल संरक्षित क्षेत्र में राष्ट्रीय उद्यान या अभयारण्य सम्मिलित हो सकते हैं। इसका केंद्रीय भाग बफर जोन कहलाता है जो पूर्णतया संरक्षित होता है, इसमें किसी भी मानवीय कार्य की इजाजत नहीं होती है जबकि दूसरा बाहरी क्षेत्र होता है इसमें थोड़ा बहुत लकड़ी की कटाई, पशुओं की चराई अनुमति लेकर की जा सकती है।

वर्तमान समय में देश में 102 नेशनल पार्क 515 वन्य प्राणी अभयारण्य और 21 जैव मंडल संरक्षित क्षेत्र बनाए गए हैं जिनका कुल क्षेत्रफल 1.57 करोड़ हेक्टेयर है।

जैव संरक्षण: वनों के साथ देश में जीवों के संरक्षण के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं इस क्रम में वन्य प्राणी अधिनियम 1972 पास हुआ जो वन्य प्राणियों के संरक्षण और रक्षण की कानूनी रूपरेखा बनाता है इस अधिनियम के दो मुख्य उद्देश्य हैं:

1. अनुसूची में सूचीबद्ध संकटापन्न प्रजातियों को सुरक्षा प्रदान करना।
2. वन्यजीवों के लिए सुरक्षित आवासीय क्षेत्रों का निर्माण एवं उनकी सुरक्षा।

वर्तमान समय में देशभर में वन्यजीवों के संरक्षण हेतु अनेक परियोजनाएं संचालित हैं उनमें से कुछ महत्वपूर्ण हैं जो अधोलिखित हैं:

1. **बाघ संरक्षण परियोजना:** यह परियोजना 1973 में प्रारंभ की गई इसके अंतर्गत देश में बाघों के संरक्षण हेतु कई संरक्षित क्षेत्र बनाए गए, जिनमें उत्तर प्रदेश का दुधवा नेशनल पार्क एवं कार्बेट नेशनल पार्क, गुजरात का गीर अभयारण्य, उड़ीसा का नंदनकानन अभयारण्य प्रमुख हैं।
2. **हाथी संरक्षण परियोजना:** इस परियोजना की शुरुआत 1992 में झारखंड के सिंहभूम जिले से प्रारंभ की गई थी। इस परियोजना का उद्देश्य देश में कम हो रही हाथियों की संख्या को बढ़ाना था, इसके अंतर्गत केरल में कोट्टूर में पहला अभयारण्य स्थापित किया गया। इसके अंतर्गत छत्तीसगढ़ में लेमो एरो और बादलखोल में भी अभयारण्य स्थापित किए गए। इसके अतिरिक्त कई अन्य हाथी संरक्षण क्षेत्र को भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है।
3. **मगरमच्छ संरक्षण परियोजना:** इस परियोजना की शुरुआत 1974 में हुई थी, अब तक देश में 16 मगरमच्छ प्रजनन केंद्र स्थापित किए गए हैं। लखनऊ में कुकरैल क्षेत्र में इसी तरह का मगरमच्छ प्रजनन केंद्र स्थापित है।
4. **कस्तूरी मृग संरक्षण परियोजना:** इस परियोजना की शुरुआत 1970 में उत्तराखंड के केदारनाथ अभयारण्य से की गई थी। जम्मू कश्मीर का दचीग्राम अभयारण्य भी कस्तूरी मृग के संरक्षण हेतु बनाया गया है।
5. **कछुआ संरक्षण परियोजना:** सन् 1975 में उड़ीसा सरकार द्वारा कछुओं के संरक्षण की योजना प्रारंभ की गई। सर्वप्रथम इसे भी भितरकनिका अभयारण्य में शुरू किया गया, बाद में इसे कई अन्य अभयारण्यों में भी विस्तारित किया गया।

निष्कर्ष

इस लेख में हमने जैव विविधता की मूल संकल्पना की व्याख्या करते हुए इसकी विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा एवं इसके विभिन्न प्रकारों का सरलीकृत विश्लेषण किया है। तदुपरांत भारत में जैव विविधता की स्थिति का प्रमाणीकृत विवरण दिया है। भारत में जैव विविधता की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया है। अंत में भारत में जैव विविधता के ह्रास के प्रमुख कारणों का उल्लेख करते हुए भारत सरकार द्वारा इसके संरक्षण हेतु किए जा रहे प्रयासों का भी विवरण विस्तार से दिया गया है। विश्वास है यह लेख जैव विविधता के अध्ययनों की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित होगा।

संदर्भ सूची

1. Maurya S.D. And Maurya R.K. (2018) *Bhautik bhugol evam Bharat ka bhautik paryavaran*, published by Abhigyan International Lucknow.
2. Singh Savindra, (2020) *Physical Geography*, published by Prayag pustak bhawan Allahabad. Revised Edition.
3. Bajracharya, S.R., Mool, P.K., Shrestha; B.R. (2007). Impact of Climate Change on Himalayan Glaciers and Glacial Lakes.
4. Case Studies on GLOF and Associated Hazards in Nepal and Bhutan. Kathmandu: ICIMOD.
5. DDNEWS (2007). Melting of Shiva lingam in holy Amaranth cave. Retrieved July 29, 2007 from <http://www.ddinews.com>
6. Gadgil, Madhav (2008). Biodiversity profile of India. Retrieved August 10, 2008 from <http://www.biodiversity.org.ces.iisc.ernet.in/hpg/cesmg/indiabio.html>.
7. IPCC (2007). Special Report on The Regional Impacts of Climate Change: An Assessment of climate change. Inter-governmental Panel on climate change (IPCC)
8. IRC (2002). Climate Change and the Indian Subcontinent: India Resource Center (IRC) Retrieved October 23, 2002 from <http://www.rediffnews.com>.
9. IUCN (2004). The IUCN Red list of Threatened species. Gland, Switzerland: The world Conservation Union.
10. Kireet Kumar (2005). Receding glaciers in the Indian Himalayan region. *Current Science*, 88 (3): 10.
11. Lemoine, N. and Böhning-Gaese, K. (2003). (12) Potential impact of global climate change on species richness of long-distance migrants. *Conservation Biology* 17(2):577–586.
12. Lonergan, S. (1998). Climate warming and India: In *Measuring the Impact of Climate Change on Indian Agriculture*, edited by Dinar et al. Washington DC: World Bank. World Bank .Technical Paper No. 402.
13. Mats Eriksson (2006). Climate change and its implications for human health in the Himalaya. ICIMOD Newsletter.
14. Sustainable Mountain Development in the Greater Himalayan Region, No. 50 11-13.
15. MoEF (2000). Annual Report 1999-2000, New Delhi: Ministry of Environment and Forests, Government of India.
16. Myers, N., Mittermeier R.A., Mittermeier, C.G., Da Fonseca, G.A.B. and Kent, J. (2000). Biodiversity hotspots for conservation priorities. *Nature*, 403: 853-858.
17. NSE, News Scientist Environment (2006). A Special Report on climate change on Himalayan forest. Retrieved October 18, 2006 from <http://www.NewsScientist.com>
18. Pachauri, R.K. (2007). Fast melting Himalayan glaciers a great worry: Retrieved November 26, 2007 16:11 IST from <http://www.rediffnews.com>.
19. Pandey, M. (2007). Global warming and their impact. Retrieved October 18, 2007 from <http://www.earthmatters.org>

20. Ramachandran, R. (2001). Impact of climate change in Asia,
21. *Frontline*: India's National Magazine Vol. 18 - Issue 07, Mar.31 - Apr. 13
22. Ravindranath, N.H. and Sukumar, R. (1998). Climatic change and tropical forests in India. *Climatic Change*, 39, 563–581.
23. Rhys, E., Green Mike Harley, Lera Miles, Jörn Scharlemann, Andrew Watkinson and Olly Watts (2003). Global Climate Change and Biodiversity. Summary of papers and discussion, University of East Anglia, Norwich, UK. 1-39 pp.
24. Thomas, E.C. (2007). Climate change and its impact on India. Retrieved November 26, 2007 from <http://www.rediffnews.com>
25. UNDP (1998). Eco-regional Co-Operation for Biodiversity Conservation in the Himalayas. Proceedings of a regional meeting organized by UNDP in co-operation with WWF and ICIMOD. Wikramanayake, E., Dinerstein, E., Allnut, T., Oucks, C. and Wettengel, W. (1998). A Biodiversity Assessment and Gap
26. Analysis of the Himalayas. World Wildlife Fund-U.S., Conservation Science Program/ UNDP Rep
